गद्य खंड

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गद्य किस प्रकार पद्य से भिन्न है? संक्षेप में लिखिए।

उ०– गद्य और पद्य की विषय-वस्तु, भाषा-शैली आदि में पर्याप्त अंतर है। वहीं गद्य- साहित्य की विषय-वस्तु प्राय: हमारी बोध-वृत्ति पर आधारित होती है और पद्य की हमारी संवेदनशीलता पर । विषय अधिकांशत: वही होते हैं, जिनके बारे में हम अधिक सोचते हैं। गद्य मस्तिष्क के तर्कप्रधान चिंतन की उपज है। इसके मुख्य विषय हमारे दैनिक कार्य-कलाप, ज्ञान-विज्ञान, कथा, वर्णन, व्याख्या आदि हैं। संक्षेप में, पद्य का संसार बहुत कुछ काल्पनिक है किन्तु गद्य का व्यावहारिक।

2. हिंदी गद्य का आविर्भाव किस शताब्दी में हुआ?

उ०– हिंदी गद्य के आविर्भाव के संबंध में विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ 10 वीं शताब्दी मानते हैं, कुछ 13 वीं शताब्दी। 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में हमें गद्य के प्राचीनतम प्रयोग मिलते हैं। राजस्थानी गद्य की समय-सीमा ग्यारहवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तथा ब्रजभाषा गद्य की समय-सीमा चौदहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक मानी जाती है। माना जाता है कि दसवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी के मध्य ही हिंदी गद्य का आविर्भाव हुआ था।

3. हिंदी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग किस भाषा में मिलते हैं?

उ०– हिंदी गद्य के प्राचीनतम प्रयोग हमें 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में मिलते हैं।

4. गद्य की मध्यम स्थिति से क्या तात्पर्य है?

उ०– ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, इतिहास आदि की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसे गद्य की मध्यम स्थिति कहा जा सकता है।

5. कथा साहित्य में प्रयोग की जाने वाली सामान्य भाषा कौन-सी है?

उ०– कथा साहित्य में प्रयोग की जाने वाली सामान्य भाषा खड़ीबोली गद्य है।

6. सृजनात्मक तथा उपयोगी गद्य की प्रमुख विधाओं के नाम बताइए।

उ०– निबंध, प्रबंध, आलोचना, कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी आदि सभी प्रचलित विधाओं से हिंदी गद्य का सृजनात्मक स्वरूप संपन्न है। उपयोगी साहित्य के अंतर्गत, दर्शन, इतिहास, राजनीति, शिक्षा, विज्ञान आदि सभी विषयों से संबंधित विधाएँ आती हैं।

7. मनुष्य अपने विचारों को तत्काल अभिव्यक्त करने के लिए भाषा के किस रूप का प्रयोग करता है?

उ०– मनुष्य अपने विचारों को तत्काल अभिव्यक्त करने के लिए भाषा के गद्य रूप का प्रयोग करता है।

8. मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली खड़ीबोली का साहित्यिक रूप क्या कहलाता है?

उ०– मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली खड़ीबोली का साहित्यिक रूप शुद्ध परिनिष्ठित रूप कहलाता है।

9. राजस्थानी गद्य हमें किस प्रकार की रचनाओं में देखने को मिलता है?

उ०– राजस्थानी गद्य हमें दसवीं शताब्दी के दानपत्रों, पट्टे-परवानों, टीकाओं व अनुवाद ग्रंथों के रूप में देखने को मिलता है।

10. खड़ीबोली गद्य के प्रथम चार उन्नायकों के नाम व उनकी रचनाएँ लिखिए।

उ०– **खड़ीबोली गद्य के प्रथम चार उन्नायकों के नाम व उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं–**

(अ) सदासुखलाल— सुखसागर

(ब) इंशा अल्ला खाँ— रानी केतकी की कहानी

(स) सदल मिश्र— नासिकेतोपाख्यान

(द) लल्लूलाल— प्रेमसागर

11. खड़ीबोली गद्य के प्रसार में ईसाई पादरियों का क्या योगदान रहा?

उ०– ईसाई पादरियों का प्रधान उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना था और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने प्रेस की स्थापना की। उन्होंने हिंदी खड़ीबोली गद्य में 'बाइबिल' के अनेक अनुवाद प्रकाशित किए । स्कूलों में हिंदी माध्यम से पढ़ाने के लिए अनेक पाठ्य पुस्तकें तैयार की तथा भारतीय पुराणों आदि को गद्य में लिखवाकर छपवाया। इस प्रकार उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी गद्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

12. आर्य समाज के आंदोलन ने हिंदी गद्य के विकास में क्या भूमिका निभाई?

उ०– आर्य समाज के संस्थापक 'महर्षि दयानंद सरस्वती' ने अपने उपदेशों का प्रचार-प्रसार हिंदी भाषा में किया तथा अपने प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना भी हिंदी भाषा में की।

13. राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' तथा राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा-शैली में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उ०– राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' ने अपनी भाषा में अरबी और फारसी भाषा के शब्दों का समावेश उचित समझा, जिससे उनकी भाषा बोझिल हो गई। राजा लक्ष्मण सिंह हिंदी उसी भाषा को मानते थे, जिसमें संस्कृत शब्दों की अधिकता हो । यही इन दोनों की भाषा-शैली का मुख्य अंतर था।

14. बीसवीं शताब्दी में किस व्यक्ति ने हिंदी गद्य के निर्माण व प्रसार के लिए सर्वाधिक स्तुत्य कार्य किया?

उ०– बीसवीं शताब्दी में 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' ने हिंदी गद्य के निर्माण व प्रसार के लिए सर्वाधिक स्तुत्य कार्य किया।

15. पूर्व भारतेंदु अथवा प्राचीन युग की समय-सीमा क्या है?

उ०– पूर्व भारतेंदु अथवा प्राचीन युग का समय 13 वीं शताब्दी से 1868 ई० तक का है।

16. भारतेंदु युग की दो मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उ०– भारतेंदु युग की दो मुख्य विशेषताएँ हैं—

(अ) इस युग में संस्कृत के सरल शब्दों के साथ-साथ सर्वसाधारण में प्रचलित विदेशी शब्दों को भी ग्रहण किया गया।

(ब) इन्होंने तद्‌भव व देशज शब्दों के साथ कहावतों और मुहावरों का प्रयोग कर भाषा को सजीवता प्रदान की।

17. भारतेंदु मंडल के लेखकों में से किन्हीं दो का नामोल्लेख कीजिए।

उ०– भारतेंदु मंडल के लेखकों में प्रतापनारायण मिश्र व बालकृष्ण भट्ट प्रमुख हैं।

18. द्विवेदी युग की समय-सीमा क्या है?

उ०– द्विवेदी युग की समय-सीमा 1900 ई० से 1922 ई० तक मानी जाती है।

19. द्विवेदी युग के दो महत्वपूर्ण गद्य लेखकों के नाम बताइए।

उ०– द्विवेदी युग के दो महत्वपूर्ण गद्य लेखक हैं— महावीर प्रसाद द्विवेदी व श्यामसुंदर दास।

20. हिंदी गद्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का क्या योगदान है?

उ०– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक के रूप में भाषा को शुद्ध, सुसंस्कृत व परिमार्जित बनाने में पूर्ण योगदान दिया तथा नवीन विषयों पर गद्य रचना के लिए लेखकों को प्रोत्साहित किया।

21. छायावादी युग के गद्य साहित्य की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उ०– छायावादी युग के गद्य साहित्य की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं— प्रतीकात्मकता व लाक्षणिकता।

22. विषय-वस्तु के आधार पर कहानी कितने प्रकार की होती हैं?

उ०– विषय-वस्तु के आधार पर कहानी चार प्रकार की होती हैं—

(अ)घटनाप्रधान, (ब) चरित्रप्रधान, (स) भावप्रधान, (द) वातावरणप्रधान

23. ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात कब हुआ?

उ०– ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात चौदहवीं शताब्दी से माना जाता है।

24. खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ कवि गंग की किस कृति से माना गया है?

उ०– खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ कवि गंग की 'चंद छंद बरनन की महिमा' से माना गया है।

25. ब्रह्म समाज के प्रवर्तक कौन हैं?

उ०– ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजा राजमोहन राय हैं।

26. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक कौन हैं?

उ०– 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी हैं।

27. नाटक को रूपक क्यों कहा जाता है?

उ०– नाटक में पात्रों एवं घटनाओं को अन्य पात्रों व घटनाओं पर आरोपित किया जाता है, इसलिए इसे रूपक भी कहा जाता है।

28. 'अजातशत्रु' नाटक के रचयिता कौन हैं?

उ०– 'अजातशत्रु' नाटक के रचयिता जयशंकर प्रसाद जी हैं।

29. हिंदी के दो प्रगतिवादी लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– हिंदी के दो प्रगतिवादी लेखक हैं— (अ) विद्यानिवास मिश्र, (ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

30. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा नंददुलारे वाजपेयी किस काल के लेखक हैं?

उ०– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा नंददुलारे वाजपेयी छायावादी युग के लेखक हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की कुछ रचनाओं में हमें छायावादोत्तर काल की विशेषताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं।

31. किन्हीं तीन यात्रावृत्त लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– तीन यात्रावृत्त लेखक हैं— (अ) राहुल सांकृत्यायन, (ब) मोहन राकेश, (स) धर्मवीर भारती ।

32. 'एक घूँट' व 'अँधेर नगरी' किस विधा की रचनाएँ हैं?

उ०– 'एक घूँट' व 'अँधेर नगरी', क्रमश: एकांकी व नाटक विधा की रचनाएँ हैं।

33. उपन्यास किसे कहते हैं?

उ०– उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है— 'उप' अर्थात् निकट या सामने, 'न्यास' अर्थात् रखना; अर्थात् सामने रखना। अत: मानव जीवन, समाज या इतिहास के यथार्थ सत्य को संवाद एवं दृश्यात्मक घटनाओं पर आधारित चित्रण के माध्यम से पाठकों के सम्मुख यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने वाली विधा को उपन्यास कहा जाता है।

34. उपन्यास सम्राट किन्हें कहा जाता है?

उ०– मुंशी प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट कहा जाता है।

35. हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास किसे माना जाता है?

उ० लाला श्रीनिवासदास द्वारा रचित 'परीक्षा गुरु' को हिंदी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है।

36. संस्मरण से आप क्या समझते हैं?

उ० 'संस्मरण' का अर्थ है— 'स्मृत' वस्तु अथवा व्यक्ति। लेखक द्वारा अपनी स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा विषय पर कोई लेख लिखा जाता है, उसे 'संस्मरण' कहा जाता है।

37. डायरी किसे कहते हैं?

उ०– लेखक द्वारा प्रतिदिन घटित होने वाली प्रमुख घटनाओं अथवा तथ्यों को दिनांक के क्रम में सुव्यवस्थित रूप से लिखा जाना 'डायरी' कहलाती है। यह लेखक के स्वयं के जीवन से संबंधित होती है। यह संक्षिप्त या विस्तृत किसी भी प्रकार की हो सकती है।

38. 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना किसने की?

उ०– सत्यार्थ प्रकाश की रचना महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने की।

39. जीवनी व आत्मकथा में मूलभूत अंतर क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– जीवनी में लेखक के द्वारा किसी महान या व्यक्ति के जीवन की जन्म से मृत्यु पर्यंत घटनाओं का वर्णन किया जाता हैं, जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा पाठकों के समक्ष आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करता है।

40. साहित्य में रेखाचित्र से क्या तात्पर्य है?

उ०– रेखाचित्र में शब्दों की कलात्मक रेखाओं के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आंतरिक स्वरूप का वर्णन इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित हो जाए। रेखाचित्र में चित्रकला तथा साहित्य का सुंदर समन्वय दिखाई पडता है। इसमें लेखक की निजी अनुभूति यथार्थ रूप से अभिव्यक्त होती है।

(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ब्रजभाषा का सूत्रपात माना जाता है–

(अ) संवत 1500 (ब) **सवंत 1400 के आस-पास**
(स) संवत 1543 के आस-पास (द) संवत 1600

2. शुक्ल युग की समय-सीमा है–

(अ) सन् 1868 से 1900 तक (ब) सन् 1900 से 1922 तक
(स) सन् 1938 से 1947 तक (द) **सन् 1919 से 1938 तक**

3. छंद, ताल, तुक व लय से मुक्त रचना कहलाती है–

(अ) काव्य (ब) **गद्य**
(स) श्लोक (द) कविता

4. भारतेंदु युग की समय-सीमा है–

(अ) सन् 1368 से 1600 तक
(ब) **सन् 1868 से 1900 तक**
(स) सन् 1400 से 1533 तक
(द) सन् 1900 से 1922 तक

5. सन् 1900 से 1922 ई० तक की अवधि कहलाती है–

(अ) भारतेंदु युग
(ब) शुक्ल युग
(स) **द्विवेदी युग**
(द) शुक्लोत्तर युग

6. स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना ____________ भाषा में की थी।

(अ) बंगला
(ब) **हिंदी**
(स) अंग्रेजी
(द) फारसी

7. सदासुखलाल ____________ शहर के निवासी थे।

(अ) मेरठ
(ब) कानपुर
(स) बरेली
(द) **दिल्ली**

8. हिंदी गद्य का जनक कहा जाता है–

(अ) बालकृष्ण भट्ट को
(ब) प्रेमचंद को
(स) पूर्णसिंह जी को
(द) **भारतेंदु हरिश्चंद्र को**

9. सन् 1900 से 1922 ई० तक की अवधि का नाम 'द्विवेदी युग' किसके नाम पर पड़ा?

(अ) श्यामसुंदर दास
(ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(स) भारतेंदु हरिश्चंद्र
(द) **महावीर प्रसाद द्विवेदी**

10. हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार-पत्र था–

(अ) **उदंत मार्तंड**
(ब) धर्मयुग
(स) बंगदूत
(द) मर्यादा

11. 'चंद छंद बरनन की महिमा' के रचयिता हैं–

(अ) सूरदास
(ब) कबीरदास
(स) **गंग**
(द) सदासुखलाल

12. सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार-पत्र प्रकाशित हुआ–

(अ) कानपुर से
(ब) **कोलकाता से**
(स) मुंबई से
(द) आगरा से

13. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं–

(अ) सदासुखलाल
(ब) लल्लूलाल
(स) **इंशा अल्ला खाँ**
(द) सदल मिश्र

14. लल्लूलाल की रचना है–

(अ) **प्रेम सागर**
(ब) सुखसागर
(स) पंचांग दर्शन
(द) नासिकेतोपाख्यान

15. 'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक हैं–

(अ) **प्रतापनारायण मिश्र**
(ब) प्रेमचंद
(स) जयशंकर प्रसाद
(द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

16. आर्य समाज के संस्थापक हैं–

(अ) **स्वामी दयानंद सरस्वती**
(ब) राजाराम मोहनराय
(स) नवीनचंद्र राय
(द) गुलाबराय

17. किस महान साहित्यकार के कारण सन् 1868 से 1900 ई० तक की अवधि को 'भारतेंदु युग' नाम दिया गया?

(अ) **भारतेंदु हरिश्चंद्र**
(ब) संपूर्णानंद जी
(स) प्रतापनारायण मिश्र
(द) प्रेमचंद

18. महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'गिल्लू' किस विधा की रचना है?

(अ) आत्मकथा (ब) **रेखाचित्र**

(स) संस्मरण (द) जीवनी

19. 'भारत दुर्दशा' नाटक के लेखक हैं–

(अ) जयशंकर प्रसाद (ब) **भारतेंदु हरिश्चंद्र**

(स) गोविंद बल्लभ पंत (द) हरिकृष्ण प्रेमी

20. हिंदी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है–

(अ) नाटक (ब) उपन्यास

(स) रेखाचित्र (द) **कहानी**

21. संस्मरण विधा की रचना है–

(अ) **स्मृति की रेखाएँ** (ब) भारतीय संस्कृति

(स) ममता (द) नए मेहमान

22. 'राष्ट्रमत' नामक मराठी पत्र के संपादक हैं–

(अ) **काका कालेलकर** (ब) भारतेंदु हरिश्चंद्र

(स) महावीर प्रसाद द्विवेदी (द) प्रतापनारायण मिश्र

23. प्रेमचंद जी की पहली कहानी है–

(अ) नमक का दरोगा (ब) **सौत**

(स) बलिदान (द) ईदगाह

24. प्रेमचंद जी की आखिरी कहानी है–

(अ) ईदगाह (ब) बलिदान

(स) **कफन** (द) पंच परमेश्वर

25. 'गोदान' उपन्यास किस उपन्यासकार से संबंधित है?

(अ) शिवानी (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' (द) **प्रेमचंद**

1. बात (प्रतापनारायण मिश्र)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आधुनिक कालीन हिंदी–साहित्य के रचनाकारों की वृहत्त्रयी में किन लेखकों की गिनती होती है?

उ०– आधुनिक कालीन हिंदी–साहित्य के रचनाकारों की वृहत्त्रयी में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र की गिनती की जाती है।

2. प्रतापनारायण मिश्र की जन्म–तिथि और जन्म–स्थान के बारे में बताइए।

उ०– प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 1856 ई० में उत्तर प्रदेश के बैजे (उन्नाव) नामक गाँव में हुआ था।

3. प्रतापनारायण मिश्र के पिताजी का क्या नाम था और वे मिश्र से किस तरह की अपेक्षा रखते थे?

उ०– प्रतापनारायण मिश्र के पिताजी का नाम संकटाप्रसाद था, जो एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और वे मिश्र जी से अपेक्षा रखते थे कि वे भी ज्योतिषी बनें।

4. घर में रहकर ही मिश्र जी ने किन–किन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया?

उ०– मिश्र जी ने घर में रहकर ही हिंदी, उर्दू, बंगला, फारसी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

5. प्रतापनारायण मिश्र किस प्रकार साहित्य के संपर्क में आए?

उ०– मिश्र जी छात्रावस्था से ही 'कविवचन सुधा' के गद्य–पद्य–मय लेखों का नियमित पाठ करते थे, जिससे हिंदी के प्रति उनका अनुराग उत्पन्न हुआ। लावनी गायकों की टोली में आशु रचना करने तथा ललित जी की रामलीला में अभिनय करते हुए उनसे काव्य रचना की शिक्षा ग्रहण करने से वे स्वयं मौलिक रचना का अभ्यास करने लगे। इसी बीच वे भारतेंदु जी के संपर्क में आए। उनका आशीर्वाद व प्रोत्साहन पाकर वे हिंदी गद्य तथा पद्य रचना करने लगे।

6. मिश्र जी ने भाषा की किन शैलियों का प्रयोग अपने साहित्य में किया? किसी एक शैली का उदाहरण दीजिए।

उ०– मिश्र जी ने अपनी भाषा में वर्णनात्मक, विचारात्मक तथा हास्य-विनोद शैलियों का सफल प्रयोग किया है। इनकी शैली को दो प्रमुख प्रकारों में बाँटा जा सकता है—

विचारात्मक शैली तथा व्यंग्यात्मक शैली।

व्यंग्यात्मक शैली से संबंधित एक उदाहरण है— ''अपाणिपादो जवनो ग्रहीता' पर हठ करने वाले को यह कह के बातों उड़ावेंगे कि' हम लूले-लँगड़े ईश्वर को नहीं मान सकते, हमारा प्यारा तो कोटि काम सुंदर श्याम वर्ण विशिष्ट है।''

7. समय अभाव और सुविधाओं का अभाव होने पर भी मिश्र जी का हिंदी साहित्य में क्या योगदान है?

उ०– मिश्र जी भारतेंदु मंडल के प्रमुख लेखकों में से एक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध रूपों में सेवा की। वे कवि होने के अतिरिक्त उच्चकोटि के मौलिक निबंध लेखक और नाटककार थे। हिंदी गद्य के विकास में मिश्र जी का बड़ा योगदान रहा है। आचार्य शुक्ल जी ने पं० बालकृष्ण भट्ट के साथ मिश्र जी को भी महत्व देते हुए अपने हिंदी साहित्य के इतिहास में लिखा है-''पं०प्रतापनारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट ने हिंदी गद्य साहित्य में वही काम किया है, जो अंग्रेजी गद्य साहित्य में एडीसन और स्टील ने किया।''

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. प्रतापनारायण मिश्र के जीवन परिचय एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

उ०– **जीवन परिचय -** हिंदी गद्य साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रतापनारायण मिश्र का जन्म 1856 ई० में उत्तर प्रदेश के बैजे (उन्नाव) नामक गाँव में हुआ। वे भारतेंदु युग के प्रमुख साहित्यकार थे। उनके पिता संकटाप्रसाद एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और अपने पुत्र को भी ज्योतिषी बनाना चाहते थे। किंतु मिश्र जी को ज्योतिष की शिक्षा रुचिकर नहीं लगी, पिता ने अंग्रेजी पढ़ने के लिए स्कूल भेजा किंतु वहाँ भी उनका मन नहीं रमा। लाचार होकर उनके पिता जी ने उनकी शिक्षा का प्रबंध घर पर ही किया।

इस प्रकार मिश्र जी की शिक्षा अधूरी ही रह गई। किंतु उन्होंने प्रतिभा और स्वाध्याय के बल से अपनी योग्यता पर्याप्त बढ़ा ली थी। वह हिंदी, उर्दू और बंगला तो अच्छी तरह जानते ही थे, फारसी, अंग्रेजी और संस्कृत में भी उनकी अच्छी गति थी।

मिश्र जी छात्रावस्था से ही 'कविवचनसुधा' के गद्य-पद्य-मय लेखों का नियमित पाठ करते थे, जिससे हिंदी के प्रति उनका अनुराग उत्पन्न हुआ। लावनी गायकों की टोली में आशु रचना करने तथा ललित जी की रामलीला में अभिनय करते हुए उनसे काव्य रचना की शिक्षा ग्रहण करने से वह स्वयं मौलिक रचना का अभ्यास करने लगे। इसी बीच वह भारतेंदु जी के संपर्क में आए। उनका आशीर्वाद तथा प्रोत्साहन पाकर वह हिंदी गद्य तथा पद्य रचना करने लगे। 1882 के आसपास उनकी रचना 'प्रेमपुष्पावली' प्रकाशित हुई और भारतेंदु जी ने उसकी प्रशंसा की तो उनका उत्साह बहुत बढ़ गया।

मिश्र जी भारतेंदु जी के व्यक्तित्व से प्रभावित थे तथा उन्हें अपना गुरु और आदर्श मानते थे। ये अपने हाजिरजवाबी एवं विनोदी स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे।

15 मार्च, 1883 को, ठीक होली के दिन, अपने कई मित्रों के सहयोग से मिश्र जी ने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्र निकाला। यह अपने रंग-रूप में ही नहीं, विषय और भाषा-शैली की दृष्टि से भी भारतेंदु युग का विलक्षण पत्र था। सजीवता, सादगी, बाँकपन और फक्कड़पन के कारण भारतेंदुकालीन साहित्यकारों में जो स्थान मिश्र जी का था, वही तत्कालीन हिंदी पत्रकारिता में इस पत्र का था।

मिश्र जी परिहासप्रिय और जिंदादिल व्यक्ति थे, परंतु स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही के कारण उनका शरीर युवावस्था में ही रोग से जर्जर हो गया था। स्वास्थ्यरक्षा के नियमों का उल्लंघन करते रहने से उनका स्वास्थ्य दिनों-दिन गिरता गया। 1892 के अंत में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े और लगातार डेढ़ वर्षों तक बीमार ही रहे। अंत में 38 वर्ष की अवस्था में 6 जुलाई, 1894 को दस बजे रात में भारतेंदुमंडल के इस नक्षत्र का अवसान हो गया।

साहित्यिक योगदान- प्रतापनारायण मिश्र भारतेंदु के विचारों और आदर्शों के महान प्रचारक और व्याख्याता थे। वह प्रेम को परमधर्म मानते थे। हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान उनका प्रसिद्ध नारा था। समाज-सुधार को दृष्टि में रखकर उन्होंने सैकड़ों लेख लिखे हैं। बालकृष्ण भट्ट की तरह मिश्र जी आधुनिक हिंदी निबंधों की परंपरा को पुष्ट कर हिंदी साहित्य के सभी अंगों की पूर्णता के लिए रचनारत रहे। एक सफल व्यंग्यकार और हास्यपूर्ण गद्य-पद्य-रचनाकार के रूप में हिंदी साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है। मिश्र जी की मुख्य कृतियाँ निम्नांकित हैं—

(अ) नाटक- भारत दुर्दशा, गौ-संकट, कलि कौतुक, कलि प्रभाव, हठी हम्मीर, ज्वारी खुआरी

(ब) निबंध संग्रह- निबंध नवनीत, प्रताप पीयूष, प्रताप समीक्षा

(स) अनुदित गद्य कृतियाँ- नीति रत्नावली, कथामाला, संगीत शाकुंतल, सेनवंश का इतिहास, सूबे बंगाल का भूगोल, वर्ण परिचय, शिशु विज्ञान, राजसिंह, राधारानी, चरिताष्टक

(द) काव्य कृतियाँ– प्रेम पुष्पावली, मन की लहर, ब्रैडला-स्वागत, दंगल-खंड, कानपुर महात्म्य, शृंगारविलास, लोकोक्ति-शतक, दीवो बरहमन (उर्दू) मिश्र जी भारतेंदु मंडल के प्रमुख लेखकों में से एक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध रूपों में सेवा की। वे कवि होने के अतिरिक्त उच्चकोटि के मौलिक निबंध लेखक और नाटककार थे। हिंदी गद्य के विकास में मिश्र जी का बड़ा योगदान रहा है।

2. पं० प्रतापनारायण मिश्र की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– **भाषा–** खड़ीबोली के रूप में प्रचलित जनभाषा का प्रयोग मिश्र जी ने अपने साहित्य में किया। प्रचलित मुहावरों, कहावतों तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग इनकी रचनाओं में हुआ है। भाषा की दृष्टि से मिश्र जी ने भारतेंदु जी का अनुसरण किया और जन साधारण की भाषा को अपनाया। भारतेंदु जी के समान ही मिश्र जी की भाषा भी कृत्रिमता से दूर है। वह स्वाभाविक है। पंडिताऊपन और पूर्वीपन अधिक है। उसमें ग्रामीण शब्दों का प्रयोग स्वच्छंदतापूर्वक हुआ है। संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी ग्रहण किया गया है। भाषा विषय के अनुकूल है। मुहावरों का जितना सुंदर प्रयोग उन्होंने किया है, वैसा बहुत कम लेखकों ने किया है। कहीं-कहीं तो उन्होंने मुहावरों की झड़ी-सी लगा दी है।

शैली– मिश्र जी की शैली में वर्णनात्मक, विचारात्मक तथा हास्य-विनोद शैलियों का सफल प्रयोग किया गया है। इनकी शैली को दो प्रमुख प्रकारों में बाँटा जा सकता है—

विचारात्मक शैली– साहित्यिक और विचारात्मक निबंधों में मिश्र जी ने इस शैली को अपनाया है। इस शैली में प्रयुक्त भाषा संयत और शिष्ट है। वस्तुत: मिश्र जी के स्वभाव के विपरीत होने के कारण इस शैली में स्वाभाविकता का अभाव है।

व्यंग्यात्मक शैली– इस शैली में मिश्र जी ने अपने हास्य-व्यंग्य पूर्ण निबंध लिखे हैं। यह शैली मिश्र जी की प्रतिनिधि शैली है। जो सर्वथा उनके अनुकूल है। वे हास्य और विनोदप्रिय व्यक्ति थे। अत: प्रत्येक विषय का प्रतिपादन हास्य और विनोदपूर्ण ढंग से करते थे। हास्य और विनोद के साथ-साथ इस शैली में व्यंग्य के दर्शन होते हैं। विषय के अनुसार व्यंग्य कहीं-कहीं बड़ा तीखा और मार्मिक हो गया है। इस शैली में भाषा सरल, सरस और प्रवाहमयी है। उसमें उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और ग्रामीण शब्दों का प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियाँ और मुहावरों के कारण यह शैली अधिक प्रभावपूर्ण हो गई है।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. यदि हम वैद्य --------------------- करती रहती है।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' में संकलित एवं 'प्रतापनारायण मिश्र' द्वारा लिखित 'बात' नामक शीर्षक से उद्‌धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में बात के विभिन्न अर्थों को रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। प्रतापनारायण मिश्र ने बात के संबंध में बात करते हुए आयुर्वेद व भूगोल आदि की भी चर्चा की है।

व्याख्या– मिश्र जी कहते हैं कि यदि हम आयुर्वेद के आधार पर चिकित्सा करने वाले वैद्य होते तो कफ और पित्त से संबंधित बात की चर्चा करते, क्योंकि आयुर्वेद के अंतर्गत शारीरिक रोगों का प्रधान कारण - वात (वायु), कफ और पित्त का असंतुलित हो जाना है। इसी प्रकार भूगोल के ज्ञाता (जानने वाला)'जलबात' की चर्चा करते हुए किसी देश की जलवायु का विवरण प्रस्तुत करते हैं। किंतु यहाँ बात का प्रयोजन न तो आयुर्वेद के वात-पित्त-कफ से है और न ही भूगोल के अंतर्गत अध्ययन की जाने वाली किसी देश की जलवायु से है। बल्कि यहाँ 'बात' का तात्पर्य उन वचनों या बातचीत से है, जो बातचीत करते समय हम लोगों के मुख से निकलती है और जिसके द्वारा हम अपने हृदय के भाव (विचार) प्रकट करते हैं अर्थात् पारस्परिक बातचीत के द्वारा ही हम दूसरों के भावों को समझते हैं और उन्हें अपने विचारों को समझाते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– बात **लेखक–** प्रतापनारायण मिश्र

(ब) लेखक यदि वैद्य होते तो वह किस बात की बात करते?

उ०– यदि लेखक वैद्य होते तो वह वात-पित्त-कफ की चर्चा करते।

(स) लेखक यदि भूगोल-वेत्ता होते तो वह किस विषय पर बात करते?

उ०– यदि लेखक भूगोल-वेत्ता होते तो वह किसी देश की जलवायु पर चर्चा करते।

(द) हम अपने भावों को किस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं?

उ०– हम अपने भावों को बातचीत के द्वारा अभिव्यक्त करते हैं।